2nd semester programme

(बिहारी)

रीतिकाल की प्रमुख धाराएँ :

रीतिबद्ध कवि - केशवदास , देव , चिंतामणि , मतिराम , भिखारीदास , जसवंत सिंह

रीतिमुक्त कवि - रसखान , घनानंद , बोधा , आलम , ठाकुर

रीतिसिद्ध कवि - बिहारी , बेनी , बन्दीजन , पजनेश , कृष्णकवि

बिहारीलाल (बिहारी) संक्षिप्त परिचय

बिहारीलाल का जन्म 1603 ई. में ग्वालियर में हुआ । वे माथुर चौबे जाति के थे । उनके पिता का नाम केशवराव था । उनका बचपन बुंदेलखंड में बीता और युवावस्था उनके ससुराल मथुरा में व्यतीत हुआ । जयपुर के राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे । वे वहीं दरबार में रहकर काव्य-रचना करने लगे , वहाँ उन्हें पर्याप्त धन और यश मिला । सन 1664 में उनकी मृत्यु हो गई । बिहारी की एकमात्र रचना ' सतसई ' है । यह मुक्तक काव्य है । इसमें 719 दोहे संकलित है ।

बिहारी सतसई श्रृंगार रस की अत्यंत प्रसिद्ध और अनूठी कृति है । इस कृति के प्रत्येक दोहा को हिंदी साहित्य के लिये अनमोल माना गया है । बिहारी की काव्य का मुख्य विषय श्रृंगार ही है । उन्होंने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों का वर्णन किया है । संयोग पक्ष में बिहारी ने हावभाव और अनुभवों का बड़ा ही सूक्ष्म चित्रण किया है । उसमें बड़ी मार्मिकता है । बिहारी का वियोग वर्णन बड़ा ही अतिश्योक्ति पूर्ण है । यहीं कारण है कि उनमें स्वाभाविकता नहीं है , विरह में व्याकुल नायिका की दुर्बलता का चित्रण करते हुए उसे घड़ी के पेंडुलम जैसा बना दिया गया है ।

बिहारी मूलतः श्रृंगारी कवि हैं । उनकी भक्ति भावना राधा-कृष्ण के प्रति है और वह कहीं - कहीं प्रकट भी हुई है । बिहारी ने नीति और ज्ञान के भी दोहे लिखे है , किंतु संख्या में ये बहुत ही कम है । प्रकृति चित्रण में भी बिहारी बहुत पीछे नहीं है । बिहारी को ज्योतिष , गणित , विज्ञान आदि विविध विषयों का बड़ा ज्ञान था । अतः उन्होंने अपने दोहों में उसका ख़ूब उपयोग किया है । बिहारी की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है । शब्दों का प्रयोग भावों के अनुकूल ही हुआ है और उनमें एक भी शब्द भारती का प्रतीत नहीं होता । बिहारी ने अपनी भाषा में

कहीं-कहीं मुहावरों का भी सुंदर प्रयोग है । बिहारी के काव्य में शांत , हास्य , करुण आदि रसों के भी उदाहरण देखने को मिलते है , किन्तु मुख्य रस श्रृंगार ही है । बिहारी ने केवल दो ही छंद अपनाए है , दोहा और सोरठा । दोहा छंद की प्रधानता है । दोहे जैसे छोटे छंद में कई-कई भाव भर देना बिहारी जैसे कवि का ही काम था । बिहारी के प्रत्येक दोहे में कोई न कोई अलंकार अवश्य देखने को मिलता है । कहीं-कहीं एक साथ कई अलंकारों को स्थान भी मिला है । श्रृंगार रस के ग्रंथों में बिहारी सतसई के समान ख्याति किसी को नहीं मिली । इन ग्रंथों की अनेक टिकाएं हुई और अनेक कवियों ने इसके दोहें को आधार बनाकर कवित्त , छप्पय , सवैया आदि छन्दों की रचना की ।

बिहारी सतसई आज भी काव्य हार बनी हुई है । अपने काव्य गुणों के कारण ही बिहारी महाकाव्य की रचना न करने पर भी महाकवियों की श्रेणी में गिने जाते है । सतसई शब्द 'सत' और 'सई' से बना है , ' सत ' का अर्थ सात और ' सई ' का अर्थ सौ है । इसप्रकार सतसई काव्य वह काव्य है जिसमें सात सौ छंद होते हैं ।